IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

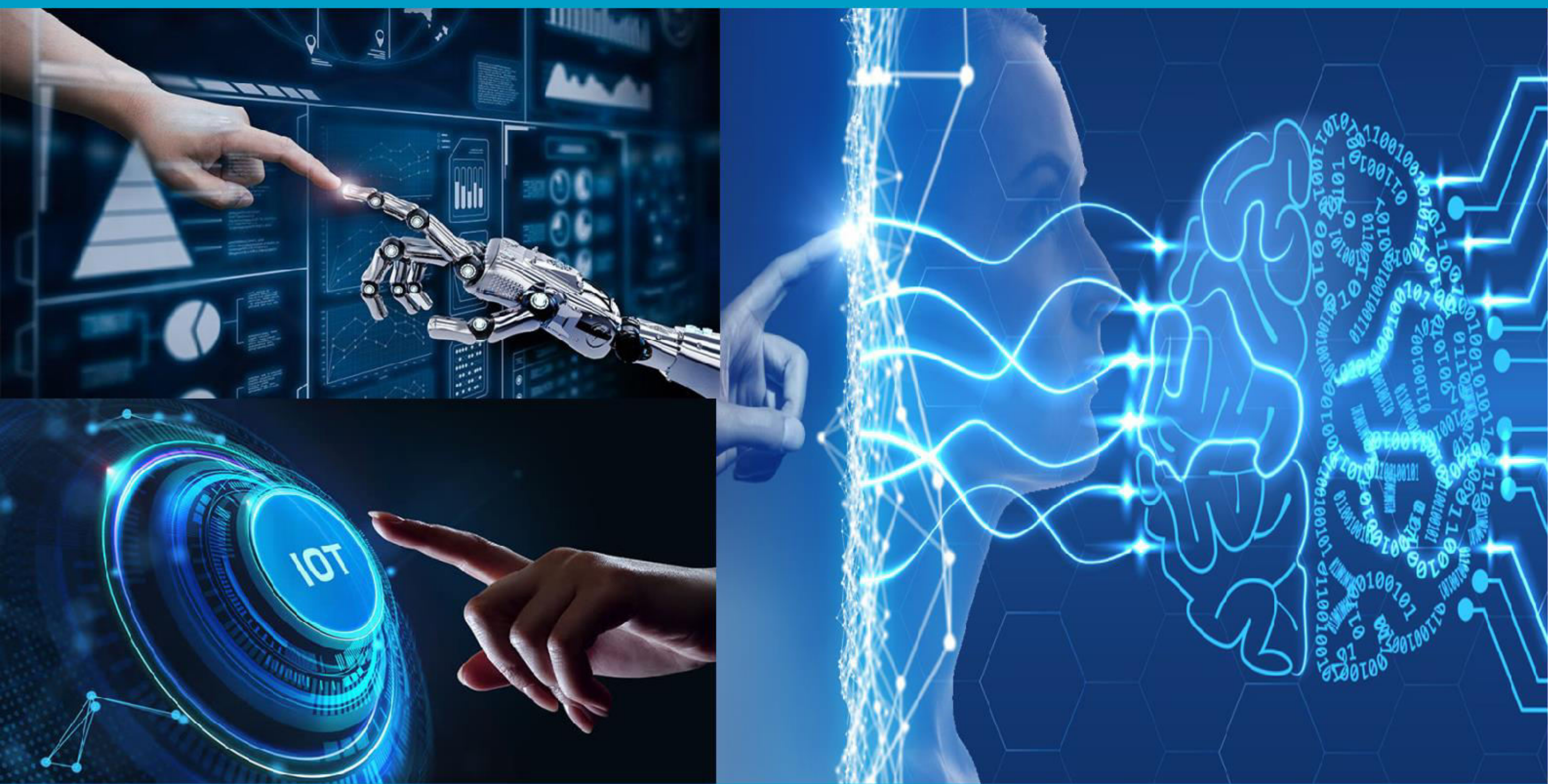

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 10, Issue 9, September 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

+91 99405 72462 +9163819 07438 ijmrsetm@gmail.com www.ijmrsetm.com

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 8, August 2023 |

प्रगतिवादी काव्यधारा में मूल्य

डॉ. सोहनराज परमार

आचार्य-हिन्दी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाड़मेर, राजस्थान

सार

प्रगतिवाद साहित्य को सोद्देश्य मानता है और उसका उद्देश्य है 'जनता के लिए जनता का चित्रण करना' दूसरे शब्दो में, वह कला 'कला के लिए' के सिद्धांत में यकीन नहीं करता बल्कि उसका यकीन तो 'कला जीवन के लिए' के फलसफे में है। मतलब कि प्रगतिवाद आनंदवादी मूल्यों के बजाय भौतिक उपयोगितावादी मूल्यों में विश्वास करता है।

परिचय

समय परिवर्तन के साथ परिवर्तन होता रहता है। वैचारिक राजनीतिक क्षेत्र में साम्यवाद, सामाजिक क्षेत्र में समाजवाद दर्शन के क्षेत्र में द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है, वही साहित्यिक क्षेत्र में प्रगतिवाद है।
इस प्रकार मार्क्सवादी दष्टिकोण से निर्मित काव्यधारा प्रगतिवाद है।

शोषक तथा शोषित वर्ग में समाज को बाँटकर यदि विचार किया जाए तो साम्यवाद का केन्द्र श्रमिक वर्ग ही है। प्रगतिवादी रचना में दलित, मजदूर शोषित के प्रति विशेष भाव व्यक्त किया जाता है।[1,2]

प्रगति का सामान्य अर्थ है- आगे बढ़ना, जो साहित्य जीवन को आगे बढ़ाने में सहायक हो वह प्रगतिशील साहित्य है। **प्रगतिवादी कवियों में सुमित्रानंदन पंत, शिवमंगला सिंह, सुमन, उदयशंकर भट्ट, नागार्जुन, नरेन्द्र शर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, राम विलास शर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला आदि**

प्रगतिवादी काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं

1. **रूढ़ियों का विरोध**-
प्रगतिवादी कवियों का ईश्वर की सत्ता, आत्मा, परमात्मा, परलोक, भाग्यवाद, धर्म, स्वर्ग, नरक आदि पर विश्वास नहीं है। उनकी दृष्टि में मानव की महत्ता सर्वोपरि है। उनके लिए धर्म एक अफीम का नशा है। प्रगतिवादी कवियों ने अंधविश्वास और रूढ़ियों पर गहरा प्रहार किया है।

2. **शोषकों के प्रति विद्रोह**, **शोषितों के प्रति सहानुभूतिः**
प्रगतिवादी कवियों ने शोषक वर्ग को घोर स्वार्थी, निर्दयी एवं कपटी के रूप में चित्रित किया है। इनकी मान्यता है कि पूँजीपति निर्धनों का रक्त चूस चूसकर सुख की नींद सोते हैं। वह बड़े व्यापारी, जमींदार तथा उद्योगपति जैसे शोषकों के चिथड़े-चिथड़े होते हुए देखना चाहता है। उनकी दृष्टि में शोषण की नींव पर खड़े समाज का नष्ट हो जाना ही श्रेयस्कर है दिनकर के शब्दों में –[3,5]

"श्वानों को मिलता वस्त्र, दूध बच्चे अकुलाते हैं,
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर, जाड़ों की रात बिताते हैं।"

इस काव्यधारा का मूल केन्द्र शोषित वर्ग है। कवियों ने शोषण से पीड़ित मजदूरों और किसानों की करुण दशा का सुन्दर चित्रण किया है। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', 'भिक्षुक का वर्णन इस प्रकार करते हैं -

"वह आता दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता।"

3. **क्रांति की भावना**
प्रगतिवादी कवियों ने शोषित वर्गों के प्रति सहानुभूति दर्शाने तथा प्राचीन परम्पराओं को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए क्रान्ति का आह्वान किया है। वे समानता स्थापित करने के लिए समाज में आमूलचूल परिवर्तन करना चाहते हैं। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की यह पंक्तियाँ देखने योग्य हैं-[7,8]

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल-पुथल मच जाए।"

4 यथार्थ चित्रण-

प्रगतिवादी काव्य में निम्नवर्ग के जीवन की प्रतिष्ठा हुई। इससे पहले साहित्य में मध्यवर्ग तथा उच्चवर्ग का जीवन प्रतिबिम्बित हुआ था। कवियों ने प्रकृति के रमणीय चित्र खींचने की बजाय नगर और ग्रामीण जीवन के नग्न यथार्थ रूप का चित्रण किया है। शोषण के दुष्परिणाम दिखलाने के लिए उन्होंने ऐसा वर्णन किया है। निम्न वर्ग के कुरुचिपूर्ण जीवन के साथ उन्होंने सहानुभूति व्यक्त की है। एक उदाहरण देखिए -

"सड़े घूर की गोबर की बदबू से दबकर,
महक जिन्दगी के गुलाब की भर जाती है।"
-केदारनाथ अग्रवाल

कवि को व्यक्ति तथा समाज के कटु सत्यों के सामने ऐश्वर्य, विलास एवं मादक वसंत सभी फीके लगने लगते हैं। जीवन के अनाचार, पीड़ित की हाहाकार ने उसे व्यथित बना दिया है। ताजमहल के संबंध में पंत जी लिखते हैं-

"हाय मत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन
जब विषण्ण निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन।"

इसी प्रकार भारत के ग्रामों का वर्णन करते हुए कवि पंत लिखते हैं

"यह तो मानव लोक नहीं है, यह है नरक अपरिचित ।
यह भारत का ग्राम सभ्यता संस्कृति से निर्वासित।"

5. **मानवतावादी दष्टिकोण**-

- प्रगतिवादी साहित्यकार मानव की शक्तियों पर असीम आस्था रखता है। उसके अनुसार ईश्वर नहीं, मानव ही अपने भाग्य का निर्माता है। ईश्वर के नाम पर हो रहे शोषण से कुपित होकर वह कहता है-

"जिसे तुम कहते हो भगवान
जो बरसाता है जीवन में
रोग, शोक, दुःख- दैन्य अपार
उसे सुनाने चले पुकार ।"
उसे ईश्वर पर आस्था नहीं है।

6. **मार्क्स का गुणगान**

प्रगतिवादी कवियों ने इस बात का बिना विचार किए हुए कि रूस की मान्यताएं भारत के लिए उपयोगी हैं या नहीं, धारा के बहुत से कवियों ने मार्क्स और रूस का गुणगान किया है। पंत जी कार्ल मार्क्स के प्रति कुछ इस प्रकार के भाव प्रदर्शित करते हैं

"धन्य मार्क्स चिर तमाच्छन्न पथ्वी के उदय शिखर,
तुम त्रिनेत्र के ज्ञात चक्षु से प्रकट हुए प्रलयंकर ।"

उपर्युक्त पंक्तियों में पंत जी ने मार्क्स को प्रलयंकारी शिव का तीसरा नेत्र बताया है तो नरेन्द्र शर्मा रूस का गुणगान करते हुए कहते हैं-

"लाल रूस है ढाल साथियों
सब मजदूर किसानों की। "

7. **सांस्कृतिक समन्वय**

प्रगतिवादी साहित्यकार की दष्टि व्यक्ति, परिवार, स्वदेश तक सीमित न होकर सम्पूर्ण विश्व तक व्याप्त है। उसका स्वर मान्यतावादी है। जापान के ध्वस्त नगरों की पीड़ा से वह भी व्यथित है। अतः यह क्रन्दन और चीत्कार कर पुकार उठता है-

"एक दिन न्यूयार्क भी मेरी तरह हो जाएगा
जिसने मिटाया है मुझे, वह भी मिटाया जाएगा।"

प्रगतिवादी कवि की द्दष्टि में हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सभी मानव के नाते बराबर हैं।[9,10]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 8, August 2023 |

8 नारी भावना-

प्रगतिवादी कवि नारी स्वतंत्रता का पक्षधर है। उसने नारी को पुरुष के समकालीन उसकी सहयोगिनी के रूप में स्वीकार किया है। साथ ही उसे उसका हक दिलाने के लिए प्रबल आवाज भी उठाई है। प्रगतिवादी कवि के लिए मजदूर तथा किसान के समान नारी भी शोषित है जो कि युग-युग से सामंतवाद की धारा में पुरुष की दासता की श्रृंखलाओं में बन्दिनी के रूप में पड़ी है। वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व खो चुकी है और वह केवल मात्र रह गई है पुरुष की वासना-तप्ति का उपकरण। अतः पंत कहते हैं-

"योनि नहीं रे नारी, वह भी मानव प्रतिष्ठित है।
उसे पूर्ण स्वाधीन करो, वह रे न नर पर अवसित ।। "

कवि पंत पुनः कहते हैं- "मुक्त करो नारी को।"

9. **वेदना चित्रण**-

प्रगतिवाद की वेदना संघर्षो से जूझने की सामाजिक वेदना है। निराशा के लिए उसमें कोई स्थान नहीं। प्रगतिवादी इसी संसार को स्वर्ग बनाना चाहते हैं जिसमें वर्ग भेद, शोषण और रूढ़ियों का नामोनिशान नहीं होगा। कवि निराला की बंगाल के अकाल पर अभिव्यक्ति वेदना हृदय को दहला देने वाली है-

"बाप बेटा बेचता है, भूख से बेहाल होकर,
धर्म धीरज प्राण खोकर, हो रही अनरीति बर्बर
राष्ट्र सारा देखता है। "

नागार्जुन आज की थोथी आजादी पर अपनी वेदना व्यक्त करते हुए कहते हैं-

"कागज की आजादी मिली
ले लो दो-दो आने में।"

10. **शिल्प योजना**-

प्रगतिवादी साहित्य जनता का साहित्य है। इसलिए उसकी भाषा भी जनभाषा है। भाषा सरल है। प्रगतिवादी कवियों का आदर्श था- जन-मन-तक अपने विचारों को पहुँचाना। इसके लिए उन्होंने बोलचाल की शब्दावली को भी ग्रहण किया है। प्रायः इस युग का साहित्य अमिधाप्रधान है। अलंकारों के सहज प्रयोग से अभिव्यक्ति स्पष्ट है। प्रगतिवादी काव्य में मुक्तक और अतुकान्त छंदों के साथ गीतों और लोकगीतों की शैली का भी प्रयोग किया गया है। प्रगतिवादी काव्य का अपना अलग महत्व है। वह जीवन के भौतिक पक्ष का उत्थान करना चाहता है। डॉ. नगेन्द्र के शब्दों में - "भारत में प्रगतिवाद का भविष्य साम्यवाद के साथ बंधा हुआ है। लेकिन फिर भी आधुनिक काव्य के अध्येयता को उसका अध्ययन आदर और धैर्यपूर्वक करना होगा। उसने हिंदी काव्य को जीवंत चेतना प्रदान की है। इसका निषेध नहीं किया जा सकता।" इस प्रकार प्रगतिवादी कविता का अपना महत्व है।[11]

विचार-विमर्श

समाज और समाज से जुड़ी समस्याओं यथा गरीबी,अकाल,स्वाधीनता,किसान-मजदूर,शोषक-शोषित संबंध और इनसे उत्पन्न विसंगतियों पर जितनी व्यापक संवेदनशीलता इस धारा की कविता में है,वह अन्यत्र नहीं मिलती। यह काव्यधारा अपना संबंध एक ओर जहां भारतीय परंपरा से जोड़ती है वहीं दूसरी ओर भावी समाज से भी। वर्तमान के प्रति वह आलोचनात्मक यथार्थवादी दृष्टि अपनाती है। प्रगतिवादी काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियां इस प्रकार हैं:-

1. सामाजिक यथार्थवाद : इस काव्यधारा के कवियों ने समाज और उसकी समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। समाज में व्याप्त सामाजिक,आर्थिक,धार्मिक,राजनीतिक विषमता के कारण दीन-दरिद्र वर्ग के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि के प्रसारण को इस काव्यधारा के कवियों ने प्रमुख स्थान दिया और मजदूर,कच्चे घर,मटमैले बच्चों को अपने काव्य का विषय चुना।

सड़े घूर की गोबर की बदबू से दबकर

महक जिंदगी के गुलाब की मर जाती है

...केदारनाथ अग्रवाल

*****

ओ मजदूर! ओ मजदूर!!

तू सब चीजों का कर्त्ता,तू हीं सब चीजों से दूर

ओ मजदूर! ओ मजदूर!!

*****

श्वानों को मिलता वस्त्र दूध,भूखे बालक अकुलाते हैं।

मां की हड्डी से चिपक ठिठुर,जाड़ों की रात बिताते हैं

*****

युवती की लज्जा बसन बेच,जब ब्याज चुकाये जाते हैं

मालिक जब तेल फुलेलों पर पानी सा द्रव्य बहाते है

पापी महलों का अहंकार देता मुझको तब आमंत्रण ---दिनकर

2. मानवतावाद का प्रकाशन : वह मानवता की अपरिमित शक्ति में विश्वास प्रकट करता है और ईश्वर के प्रति अनास्था प्रकट करता है;धर्म उसके लिए अफीम का नशा है –[10,11]

जिसे तुम कहते हो भगवान-

जो बरसाता है जीवन में

रोग,शोक,दु:ख दैन्य अपार

उसे सुनाने चले पुकार

3.क्रांति का आह्वाहन: प्रगतिवादी कवि समाज में क्रांति की ऐसी आग भड़काना चाहता है,जिसमें मानवता के विकास में बाधक समस्त रूढ़ियां जलकर भस्म हो जाएं-

देखो मुट्ठी भर दानों को,तड़प रही कृषकों की काया।

कब से सुप्त पड़े खेतों से,देखो 'इन्कलाब' घिर आया॥

*****

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ

जिससे उथल पुथल मच जाए

4. शोषकों के प्रति आक्रोश: प्रगतिवाद दलित एवं शोषित समाज के 'खटमलों'-पूंजीवादी सेठों,साहूकारों और राजा-महाराजाओं-के शोषण के चित्र उपस्थित कर उनकी मानवता का पर्दाफाश करता है-

ओ मदहोश बुरा फल हो,शूरों के शोणित पीने का।

देना होगा तुझे एक दिन,गिन-गिन मोल पसीने का॥

5.शोषितों को प्रेरणा : प्रगतिवादी कवि शोषित समाज को स्वावलम्बी बनाकर अपना उद्धार करने की प्रेरणा देता है-

न हाथ एक अस्त्र हो, न साथ एक शस्त्र हो।

न अन्न नीर वस्त्र हो, हटो नहीं, डटो नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

वह शोषित में शक्ति देखता है और उसे क्रांति में पूरा विश्वास है। इस प्रकार प्रगतिवादी कवि को शोषित की संगठित शक्ति और अच्छे भविष्य पर आस्था है-

मैंने उसको जब-जब देखा- लोहा देखा

लोहा जैसा तपते देखा,गलते देखा,ढ़लते देखा

मैंने उसको गोली जैसे चलते देखा

...केदारनाथ अग्रवाल

6. रूढ़ियों का विरोध- इस धारा के कवि बुद्धिवाद का हथौड़ा लेकर सामाजिक कुरीतियों पर तीखे प्रहार कर उनको चकनाचूर कर देना चाहते हैं-

गा कोकिल!बरसा पावक कण

नष्ट-भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन ...पंत

7. तत्कालीन समस्याओं का चित्रण : प्रगति का उपासक कवि अपने समय की समस्याओं जैसे-बंगाल का अकाल आदि की ओर आंखें खोलकर देखता है और उनका यथार्थ रूप उपस्थित कर समाज को जागृत करना चाहता है-

बाप बेटा बेचता है

भूख से बेहाल होकर,

धर्म धीरज प्राण खोकर

हो रही अनरीति,राष्ट्र सारा देखता है

एक भिक्षुक की यथार्थ स्थिति –

वह आता

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता ...निराला[8,9]

8.मार्क्सवाद का समर्थन: इस धारा के कुछ कवियों ने मात्र साम्यवाद के प्रवर्तक कार्ल मार्क्स का तथा उसके सिद्धांतों का समर्थन करने हेतु प्रचारात्मक काव्य ही लिखा है-

साम्यवाद के साथ स्वर्ण-युग करता मधुर पदार्पण

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 8, August 2023 |

और साथ ही साम्यवादी देशों का गुणगान भी किया है-

लाल रूस का दुश्मन साथी! दुश्मन सब इंसानों का

9.नया सौंदर्य बोध: प्रगतिवादी कवि श्रम में सौंदर्य देखते हैं। उनका सौंदर्य-बोध सामाजिक मूल्यों और नैतिकता से रहित नहीं है। वे अलंकृत या असहज में नहीं, सहज सामान्य जीवन और स्थितियों में सौंदर्य देखते हैं। खेत में काम करती हुई किसान नारी का यह चित्र इसी तरह का है-

बीच-बीच में सहसा उठकर खड़ी हुई वह युवती सुंदर

लगा रही थी पानी झुककर सीधी करे कमर वह पल भर

इधर-उधर वह पेड़ हटाती,रुकती जल की धार बहाती

10. व्यंग्य : सामाजिक,आर्थिक वैषम्य का चित्रण करने से रचना में व्यंग्य आ जाना स्वाभाविक है। व्यंग्य ऊपर-ऊपर हास्य लगता है किंतु वह अंतत: करुणा उत्पन्न करता है। इसीलिए सामाजिक व्यंग्य अमानवीय-शोषण सत्ता का सदैव विरोध करता है। प्रगतिशील कवियों में व्यंग्य तो सबके यहां मिल जाएगा किंतु नागार्जुन इस क्षेत्र में सबसे आगे हैं। एक देहाती मास्टर दुखरन, उसके शिष्यों और मदरसे की यह तस्वीर नागार्जुन ने इस प्रकार खींची है-[7,8]

घुन खाए शहतीरों पर की बारह खड़ी विधाता बांचे

फटी भीत है,छत है चूती,आले पर बिस्तुइया नाचे

लगा-लगा बेबस बच्चों पर मिनट-मिनट में पांच तमाचे

इसी तरह से दुखरन मास्टर गढ़ता है आदम से सांचे।

11. प्रकृति : मानव समाज की भांति प्रकृति के क्षेत्र में भी प्रगतिवादी कवि सहज स्थितियों में सौंदर्य देखता है। उसका सौंदर्य बोध चयनवादी नहीं। प्रगतिवादी कवियों ने प्रकृति और ग्राम जीवन के अनुपम चित्र खींचे हैं जिनमें रूप-रस-गंध-वर्ण के बिम्ब उभरे हैं।नागार्जुन का 'बादल को घिरते देखा है',केदारनाथ अग्रवाल का 'बसंती हवा' और त्रिलोचन का 'धूप में जग-रूप सुंदर' उत्कृष्ट कविताएं हैं।

12.प्रेम – प्रगतिवादी कवियों ने प्रेम को सामाजिक-पारिवारिक रूप में देखा है। वर्ग-विभक्त समाज में प्रेम सहज नहीं हो पाता। प्रेम वर्ग-भेद ,वर्ण-भेद को मिटाता है। प्रगतिवादी कवि प्रेम की पीड़ा का एकांतिक चित्र करते हैं। किंतु वह वास्तविक जीवन संदर्भों में होता है।अत: उनका एकांत भी समाजोन्मुख होता है; जैसे त्रिलोचन का यह अकेलापन-

आज मैं अकेला हूं,अकेले रहा नहीं जाता

जीवन मिला है यह,रतन मिला है यह

फूल में मिला है या धूल में मिला है यह

मोल-तोल इसका अकेले कहा नहीं जाता

आज मैं अकेला हूं[2,3]

13. नारी-चित्रण :प्रगतिवादी कवि के लिए मजदूर तथा किसान के समान नारी भी शोषित है,जो युग-युग से सामंतवाद की कारा में पुरुष की दासता की लौहमयी जंजीरों से जकड़ी है। स्वतंत्र व्यक्तित्व खो चुकी है और केवल मात्र रह गई है पुरुष की वासना तृप्ति का उपकरण। इसलिए वह उसकी मुक्ति चाहता है-अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व खो चुकी है और केवल मात्र रह गई है पुरुष की वासना तृप्ति का उपकरण। इसलिए वह उसकी मुक्ति चाहता है-

योनि नहीं है रे नारी! वह भी मानवी प्रतिष्ठित

उसे पूर्ण स्वाधीन करो, वह रहे न नर पर अवसित

अधिकांश प्रगतिवादियों का नारी-प्रेम उच्छृंखल और स्वछंद है-

मैं अर्थ बताता द्रोहभरे यौवन का

मैं वासना नग्न को गाता उच्छृंखल

प्रगतिवादी कवि ने नारी के सुकोमल सौंदर्य की उपेक्षा करके उसके स्थुल शारीरिक सौंदर्य को ही अधिक उकेरा है। उसने नारी की कल्पना कृषक बालाओं व मजदूरनियों में की है।[5,7]

14.साधारण कला पक्ष :प्रगतिवाद जनवादी है। अत: वह जन-भाषा का प्रयोग करता है। उसे ध्येय को व्यक्त करने की चिंता है। काव्य को अलंकृत करने की चिंता नहीं। अत: वह कहता है-

तुम वहन कर सको जन-जन में मेरते विचार।

वाणी!मेरी चाहिए क्या तुम्हें अलंकार॥

छंदों में भी अपने स्वछंद दृष्टिकोण के अनुसार उन्होंने मुक्तक छंद का ही प्रयोग किया है-

खुल गए छंद के बंध,प्रास के रजत पाश ....पंत

प्रगतिवादी कविता में नए उपमानों को लिया गया है और वे सामान्य जन जीवन और लोक-गीतों से ग्रहण किए गए हैं-

कोयल की खान की मजदूरिनी सी रात।

बोझ ढ़ोती तिमिर का विश्रांत सी अवदात॥

मशाल,जोंक,रक्त,तांडव,विप्लव,प्रलय आदि , आदि नए प्रतीक प्रगतिवादी साहित्य की अपनी सृष्टि हैं। प्रगतिवादी कवि का कला संबंधी दृष्टिकोण भाषा,छंद,अलंकार,प्रतीकों तथा वर्णित भावों से स्पष्ट हो जाता है। वह कला को स्वांत: सुखाय या कला कला के लिए नहीं, बल्कि जीवन के लिए,बहुजन के लिए अपनाता है। वह कविता को जन-जीवन का प्रतिनिधि मानता है।[3,5]

परिणाम

प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएं या प्रवृत्तियाँ- प्रगतिवादी छायावाद के कोमल स्वप्नों का यथार्थ की कटुता से छिन्न-भिन्न करके काव्य जगत में अवतारित हुआ था। इसलिए वह जीवन के अधिक निकट है। प्रगतिवादियों ने आदर्श के तरह वायुमण्डल यथार्थ धरती पर उतरकर जनजीवन की जीती जागती प्रतिभा को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। प्रस्तुतीकरण भी इस प्रक्रिया में जनजीवन की भीतरों और बाहरी दोनों ही तस्वीरें उभर कर सामने आयी है। समाज की उन्नति और नव निर्माण के लिए सबसे पहले रूढ़ियों का प्रहार किया गया। युगो से चली आ रही धार्मिक और नैतिक मान्यताओं को छोडकर शोषित और पीड़ितों का करूण गान प्रस्तुत होने लगा। इन कवियों ने मजदूरो और किसानों के प्रति सहानुभूतिपरक दृष्टिकोण अपनाया साथ ही मध्यवर्गीय समाज की विलखती जिन्दगी भी इनकी दाष्टि से अलग नही रह सकी। अतः स्पष्ट है कि प्रगतिवादी कवि जीवन की ओर मुड़े उन्होंने छायावादी हवाई किले बनाने छोड दिए। अतः प्रगतिवादी कवियों की यथार्थवादी दृष्टि को निम्नलिखित विशेषताओं के देखा और परखा जा सकता है।
1. वर्ग संघर्ष की भावना-
वर्ग भेद की भावना बहुत पुरानी है। हमारा समाज हमेशा से दो वर्गों में बँटा रहा है किन्तु वर्ग सम्बन्ध युगीन परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होते है। सामान्तवाद के पश्चात पूँजीवादी और तत्पश्चात साम्यवाद का प्रदुर्भाव हुआ। आज हमारा समाज पूंजीवादी के दौर से गुजर रहा है। जिसमें मालिक और मजदूर के बीच संघर्ष चल रहा है। इस वर्ग संघर्ष के बीच एक वर्ग है। जो सार्वनिक पिंस रहा है उसकी स्थिति त्रिशुक से कुछ कम नहीं है। मध्यवर्गीय व्यक्ति के स्वप्न उसे उच्च वर्ग की ओर ले जाते है किन्तु उसकी वर्तमान परिस्थिति का रूझन निम्न वर्ग की ओर खीचता है। इसलिए इस वर्ग की परिस्थितियों उसे क्रान्ति भी नही करने देती है। फलस्वरूप आघातो के थपेडे उसे बनाते बिगाडते रहते है। प्रगतिवादी जागृतिचेता कवियों ने पूँजीपतियों के वर्ग स्वार्थों का विरोध किया और पूँजीपति वर्ग की सत्ता को सर्वथा समाप्त करके एक ऐसे समाज का निर्माण किया जो निम्नलिखित पंक्तियों में चित्रित हुआ है-

रूढिरीतियाँ जहाँ न हो आधारित
श्रेणी वर्ग में मानव नही विभाजित
धन बल से जहाँ न हो जल-श्रय शोषण
पूरित भव जीवन के लिखित प्रयोजन

आ रहा मानव प्रगति का उगता खूनी सवेरा
दे रहा सन्देश वह सन्धा सितारे का सवेरा
विश्वास- एक दिन काली घटाओं ने घिरा आकाश
खुलकर ही रहेगा। (-महेन्द्र भटनागर)

2. प्रकृति का स्वरूप –
प्रगतिवादी काव्य मे प्रकृति का वह कोमल स्वरूप नहीं रहा जो छायावाद में था। राजनैतिक और सामाजिक संघर्षो के प्रभाव के कारण वातारण कुछ कठोर हो गया। फलस्वरूप प्रकृति की कोमल छवियों का चित्रांकन नहीं हो सका। यो कुछ प्रकृति कविताएँ भी कतिपय कवियों ने लिखी। किन्तु उनमें प्रकृति का वह प्रांजल रूप नही रहा जो छायावादी काव्य में था। नागार्जुन केदारनाथ अग्रवाल शिवमंगल सिंह आदि कुछ ऐसे प्रगतिवादी कवि हुए जिन्होने प्रकृति की कवितायें लिखी किन्तु उनमें रसमयता नही जिसकी अपेक्षा एक रसिक कवि से की जाती है।[1,3]

3. प्रेम-
प्रगतिवादी कविता का प्रेम व्यक्तिगत होते हुए भी जीवन और जगत से सम्ब है कहने का तात्पर्य यह है प्रेम प्रतिवादी कवतिा का मुख्य विषय नही है। प्रणयानुभूति वेदना और निराशा के चित्र भी अपवाद स्वरूप ही मिलते है। प्रगतिवाद का प्रेमी हाथ मे पतवार लेकर ही अगम सागर पर कर सकता है। प्रेयसी की प्रेममयी वाणी प्रेम को सासारिक जीवन की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है ।

4. नारी-
हिन्दी साहित्य में नारी की बडी विचित्र स्थितियां रही है। भोग्या आराध्या और सहकर्मिणी आदि अनेक रूप नारी के रहे है। छायावादी कवियों ने उसकी सामाजिक स्थिति पर बल दिया और उसे शोषितो के वर्ग में बिठा दिया। उनका प्रयास हमेशा यही रहा कि नारी का स्वतन्त्र व्यक्तित्व हो वह किसी के द्वारा शोषित न की जाये। कुछ साम्यवादी कवि इस प्रयत्न में लगे रहे कि नारी की स्थिति पुरूष के बराबर रहे। यहाँ तक कि छायावादी कवियों के विचार भी बदलने लगे। फलतः 'पन्त ने अपनी प्रगतिवादी रचना में स्पष्ट रूप से घोषित किया-

'आज मनुज जग से मिट जाये कुत्सिव लिंग-विभाजित
नारी नर की निखिल क्षुद्रता आधिम मानों पर स्थिति
सामूहिक जन-भाव स्वास्थ्य से जीवन हो मर्यादित
नर-नारी की हृदय मुक्ति से मानवता हो संस्कृत" (-पन्त)

सामन्तवादी ने नारी को कामकारी की बन्दिनी बना दिये था। प्रगतिवादी कवियों ने उसके इन बन्धनों को तोड दिया उनका पूर्ण प्रयास उसको मुक्त देखना था प्रगतिवादी में स्वस्थ यौन सम्बन्धों का स्वागत किया गया है : किन्तू पूँजीवादी समाज मे यौन वर्णनाओं के हाते हुए भी नारी का प्रत्येक अंग वासना के चिन्हों से चित्रित है। प्रगतिवादी कवियों ने श्रमिक नारी के क्षण अंकुर यौवन का ही चित्रण किया है। अंचल जैसे कवियों ने छायात्मक नारी की परिकल्पना के सूक्ष्म सौनदर्य के स्वरूप और समस्त नैतिकता और मर्यादाओं को भंग करते हुए वासना के तीव्र आवेग का वर्णन किया है। प्रगतिवादी कवियों की सामाजिक विवशताओं और आर्थिक प्रभावों की प्रेम वेदना की अपेक्षा अधिक तीव्रता के साथ अनुभव किया है।

पर ठोकर पर ठोकर हमने जान
तोल तराजू के पलड़े में
मन के संघर्षों से बाहर के सवर्ष
अधिक बेझिल है
और हृदय की कलियाँ खिलती देखी
रूपयों की पूनों में
और प्यार के चांद बुझ गये
जीवन की सड़कों पर आकर (-शिवमंगल सिंह सुमन)

5. राष्ट्रीय भावना-
प्रगतिवादी काव्य में राष्ट्रीय भावना का काई एक रूप नहीं मिलता है। कही शान्ति का प्रसार है तो कही समाज-सुधार की भावना व्यक्त की गई है। राष्ट्रीयता प्रगतिवादी काव्य की बहुत बड़ी उपलब्धि है। समस्त काव्य देश वासियों की आशा- आकाँक्षा सुख-दुःख तथा जीवन की विविध स्थितियों से भरा पड़ा है।[7,9]

6. धर्म और ईश्वर –

प्रगतिवादी काव्य में धर्म और ईश्वर का खुलकर विरोध किया गया है। मार्क्सवादी ईश्वर और धर्म दोनो में विश्वास नही करते। प्रगतिवादियों ने भी उन्ही के तरीके को अपनाया है। इसकी मान्यता है कि धर्म और ईश्वर की दुहाई देकर भोली जनता को भ्रमित करना है। यह विरोध का मान्यताओं के प्रति है जो रूढ़ियाँ बन गई है और समाज जाने अनजाने उन्हे अपनाये चले जा रहा है। केदार की चित्रकूट के बोड़म यात्री राम विलास शर्मा की मूर्तियाँ और पन्त की ग्राम देवता आदि कविताओं में सही विरोध अभिव्यक्त किया गया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रगतिवादी कवि धर्म और ईश्वर में विश्वास नही रखते। वे मनुष्य को ही ईश्वर का स्वरूप मानते है।

अधिकांश विद्वानों के अनुसार प्रगतिशील आंदोलन सन् 1936 में प्रारंभ हुआ। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई जिसका प्रथम अधिवेशन प्रेमचंद के सभापतित्व में हुआ।

साहित्य केवल मन बहलाव की चीज नहीं है अपितु मनोरंजन के सिवा उसमें और भी कुछ उद्देश्य है। अब वह केवल नायक - नायिका के संयोग की कहानी नहीं सुनाता है अपितु जीवन की समस्याओं पर भी विचार करता है और हल करने का सुझाव देता है। अब वह स्फूर्ति और प्रेरणा के लिए अद्‌भुत आश्र्चजनक घटनाएँ नहीं ढूढ़ता और किन्तु उसे उन प्रश्नों में दिलचस्पी है जिससे समाज या व्यक्ति प्रभावित होते हैं। उसकी उत्कृष्टता की वर्तमान कसौटी अनुभूति की वह तीव्रता है जिससे वह हमारे भावों और विचारों में गति पैदा करता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि छायावाद की समाप्ति पर 1936 के आसपास सामाजिक चेतना को साथ लेकर प्रगतिवादी युग का आरंभ हुआ। छायावाद ने जीवन सौदंर्य के संगममरमरी ताज को बना तो दिया किन्तु वह आंखों को ही तृप्त कर सका। उसके झरोखों से मंदिर बयार तो आ सकी , पर उसका स्पर्श मात्र सिहरन पैदा कर सभा जीवन की अदृश्य शक्तियों को जागृत कर यर्थाथ को झेलने की हिम्मत न दे सका। छायावादियों का स्वप्न सत्य के ताप से झुलसने लगा और धीरे - धीरे भीतर - ही - भीतर जनमानस में एक सुगबुगाहट हुई। एक नया मानवतावाद जन्मा , जीवन यथार्थ की ठोस धरती पर आ खड़ा हुआ और इसे अभिव्यक्ति देने वाला काव्य प्रगतिवाद कहलाया। प्रगतिवादी काव्य के विकास में राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश , माक्र्सवादी दर्शन , फ्रॉयडीय चेतना और छायावाद की जीवन शून्य व्यक्तिवादी कविता के प्रति प्रतिक्रिया भाव भी सहायक रहा। प्रगतिवाद , सामाजिक यर्थाथवाद के नाम पर चलाया गया। यह वह साहित्यिक आंदोलन है जिसमें जीवन और यथार्थ के वस्तु सत्य को उतर छायावाद काल में प्रश्रय मिला और जिसने सर्वप्रथम यथार्थवाद की ओर समस्त साहित्यिक चेतना को अग्रसर होने की प्रेरणा दी। कहा जा सकता है कि इस काल में कवियों की मुख्य दृष्टि धरती और समाज की ओर रही। प्रगतिवाद ने वर्गभेद की खाई को पाटने का काम तो किया ही , मनुष्यों को सामाजिक और राजनैतिक भूमिका प्रदान की। प्रगतिवादी कवियों ने बाह्य जगत की पद्धति , रीति नीति और मानवीय समस्याओं को सही अर्थ में समाजोन्मुखी करने का काम किया है। प्रगतिवादी कवियों ने यथार्थ के धरातल पर कार्य किया।

प्रगतिवादी कवियों में पंत , निराला , दिनकर , नवीन , नागाजुर्न , केदार , धूमिल , रामविलास शर्मा , मुक्तिबोध , रांघेय राघव , त्रिलोचन , आदि महान कवियों की गणना की जाती है। इन कवियों ने अभिव्यक्ति के क्षेत्र में सरल से सरल भाषा लिखने तथा जन मन तक के भावों को सहज ढंग से प्रस्तुत करने वाली वाणी का सहारा लिया। इन कवियों ने अपने काव्य द्वारा सामाजिक चेतना को जागृत किया और अपनी समाजवादी विचारधारा के द्वारा जन मानस को जागरूक किया। अतएव इस युग की कविता सपनों में नहीं पल सकती। उसकी जड़ो को अपनी पोषण सामग्री धारण करने के लिए कठोर धरती का आलय लेना पड़ रहा है।

पंत ने वर्तमान मानव को पूर्ण नहीं माना क्योंकि आज का मानव जाति , वर्ण , संस्कृति और समाज के खंड़ों में विभाजित है इसलिए उसमें मानवता का संचार करना आवश्यक है वे कहते भी हैं -

“ आज मनुज को खोज निकालो।
जाति , वर्ण , संस्कृति , समाज से
मूल व्यक्ति को फिर से बचा लो।
राजा , प्रजा , धनी और निर्धन
सभ्य , असंस्कृत , सज्जन - दुर्जन
भव मानवता से सबको भर
खण्ड मनुज को फिर से ढालो।। ”1

पंत की भांति निराला की कविताओं में प्रगतिवाद का मुख्य स्वर दिखाई देता है। उन्होंने भी समाज के गंभीर मुद्दों को अपने काव्य में स्थान दिया। निराला की 'परिमल' काव्य संग्रह की 'भिक्षुक', 'विधवा', 'बादल राग', 'शिवाजी का पत्र' आदि कविताओं में नवीन क्रांति का चित्रण है। 'भिक्षुक' और 'विधवा' में समाज के शोषित और पददलित अंगो के प्रति कवि ने सहानुभूति व्यक्त की है और जीवन की यथार्थ चित्रण किया है।[10,11]

"वह आता
दो टूक कलेजे का करता पछताता पथ पर आता
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठीभर दाने को भूख मिटाने को
मुंह फटी पुरानी झोली का फैलाता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।"2

निराला ने अपनी 'कुकरमुत्ता' रचना में कुकुरमुत्ता को सर्वहारा तथा गुलाब को पूंजीवादी काव्य में प्रतीक के रूप में स्थान दिया है। प्रगतिवादी काव्य में 'कुकुरमुत्ता' एक सशक्त कृति के रूप में सामने आई। इसमें प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक जीवन के जो व्यंग्य चित्र प्रस्तुत किए वे उनकी उत्कृष्ट काव्य कला के परिचायक है।

"अबे सुनबे गुलाब
भूल मत पाई खुशबू रंगो आव
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतना इतराता कैपिटलिस्ट"3

दिनकर जी की गणना भी प्रगतिवादी कवियों में की जाती है। इनको राष्ट्र कवि कहा जाता है दिनभर छायावाद के चिंतनशील कवि है। ये भी सामाजिक समस्याओं के प्रति प्रगतिशील दृष्टि रखते है। दिनकर के काव्य में उन विषमताओं का वर्णन किया है जो शोषित और निर्धनों को ऊपर नहीं उठने देती। कठिन श्रम के पश्चात भी उन लोगों को भोजन और वस्त्र जैसी सुविधाएँ प्राप्त नहीं होती हैं।

नारी की दुर्दशा का चित्रण कर इन्होंने नारी के प्रति आस्था प्रकट की। उन्होंने नारियों को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए उकसाया है। दिनकर ने समाज में चल रही सभी विसंगतियों को यथार्थ के रूप में प्रस्तुत किया है जैसे नकली दवाइयों के व्यापारियों तथा पुलिस अधिकारियों के भ्रष्ट चरित्र के संदर्भ में वे लिखते हैं कि -

"अजब हमारा यह तंत्र है।
नकली दवाइयों का व्यापारी स्वतंत्र है
पुलिस करे जो कुछ, पाप है।
चोर का जो चाचा है, पुलिस का भी बाप है"4

केदारनाथ अग्रवाल जी का काव्य भी प्रगतिवादी चेतना के लिए जाना जाता है। केदार जी ने देश के किसान, गरीब, मजदूर, और शहर के निम्न वर्ग के साथ-साथ सर्वहारा वर्ग को निकट से देखा है और उसी को अपनी काव्य की पक्तियों में पिरोया, 'हे मेरी तुम' कविता में वे लिखते हैं-

"डंक मार संसार न बदला
प्राण-हीन पतझार न बदला
बदला शासन देश न बदला
राजतंत्र का भेष न बदला।"5

केदारनाथ ने अपने काव्य में पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था के कारण बढ़ी हुई मंहगाई का चित्रण किया जिसकी मार गरीबों पर पड़ती है। बहुत ही सहज और सत्य तरीके से इन्होंने अपने काव्य में मंहगाई का चित्रण किया है।

"नव चलता घर
अब नहीं चलता चलाए
ठेलने ढालने से
इस महंगाई में
कमाई पड़ गई खटाई है।"6

किसानों की असहयता का चित्रण भी वास्तविक रूप से किया। शोषक व सर्वहारा के संघर्ष में सर्वहारा भी विजय, मानव प्रेम, समाजवादी और यर्थाथवादी दृष्टिकोण दी इनमें काव्य में प्रमुख विषय रहे हैं।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 8, August 2023 |

सामाजिक यथार्थ को व्यंग्य के रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय नागार्जुन को जाता है उनका सपूर्ण काव्य जीवन यथार्थ पर आधारित है। अपने काव्य में उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों पर करारा व्यंग्य किया। अपने काव्य संग्रह में नागार्जुन ने एक जगह ऐसे पात्र का उल्लेख किया है जो अर्थाभाव के कारण पेचिस की बीमारी से मर गया। यमराज उससे उसके मरने का कारण पूछता है। इस नाटकीय संवाद में नागार्जुन यथार्थवादी दृष्टिकोण का उजागर करते हो।[10]

"ओ रे प्रेत
कड़ककर बोले नरक के स्वामी यमराज
सच-सच बतला
कैसे मरा तू?
भूख से अकाल से "7

उनकी 'आदम का तबेला' कविता में कलकते के मध्यवर्गीय परिवार का दयनीय यथार्थ चित्र, वहीं 'सतरंगे पंखो वाली' में मल्लाहों के दरिद्र जीवन तथा 'रामराज', 'सच-सच-बोलना' आदि कविताएं पूंजीवाद के अत्याचार को प्रकट करती है।

'त्रिलोचन' जी प्रगतिवादी काव्यधारा के अभिन्न अंग के रूप में जाने जाते है। वे एकमात्र अकेले ऐसे कवि हो जो अपनी अनुभूतियों और अभिव्यक्ति के द्वारा मानववादी कवियों के निकट पहुंच जाते है। त्रिलोचन ने अपने काव्य में शोषण, अत्याचार, मजदूरों की सहायता, वर्ण व्यवस्था, पूंजीवाद व्यवस्था पर लिखा है। समाज में नारी की स्थिति को उन्होंने बहुत ही सुंदरता के साथ दिखाया है नारी हमेशा दलित पीड़ित और शोषित रही है। अगर वह विधवा हो जाती है तो उसके दुख का अंत नहीं होता। त्रिलोचन लिखते हैं

"अपनी नोक लौट आता था, निकली नारी
और पास आयी, चीहना अतवरिया थी जो
भेले में हिरा गई थी। बोली लाचारी
मुझे फेर लाई, वह तजकर सरग को। "8

डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन ने भी अपनी कविताओं में समाजवादी दृष्टि को अपनाया। उनके काव्य में जीवन के विभिन्न पत्रों का चित्रण किया गया है। उनकी अधिकांश रचनाएं जीवन और जगत की यथार्थता को दर्शाती है। वे अपने काव्य में स्वतन्त्रता के लिए क्रान्ति की प्रेरणा देते दिखाई पड़ते हैं। उनकी 'प्रलय सृजन', जीवन के गान आदि कविताएँ सामाजिक दुःख दैन्य से युक्त है। उन्होंने अपनी कविताओं में सामाजिक वास्तविकता को दिखाया। एक स्थल पर वे कहते हैं

"बिलखते शिशु की व्यथा पर दृष्टि तक जिनमें न फेंकी
यदि क्षमा कर दूं उन्हें धिक्कार माँ की कोख मेरी,
चाहता हूँ ध्वस कर देना विषमता की कहानी
तो सुलभ सबको जगत में वस्त्र भोजन अन्न पानी। "9

प्रगतिवादी कवियों में मुक्तिबोध का स्थान अग्रण्य है। उन्होंने शोषितों, दलितों, मजदूरों, किसानों, शासकीय कर्मचारियों तथा मध्यमवर्ग के यथार्थ चित्रण अपने काव्य में किये। यथार्थ का जितना बोध मुक्तिबोध को है उतना किसी और को नहीं। उनकी कविताएँ 'चाँद का मुँह टेढ़ा है', 'डूबता चाँद' जैसी कविताएँ महत्त्वपूर्ण है। उनका यथार्थ काल्पनिक न होकर प्रत्यक्ष तथा सत्य से युक्त है। अतीत, वर्तमान व भविष्य में दिखने वाली कुरूपताओं का यथार्थ चित्रण उन्होंने अपने काव्य में किया है।

"आज के अभाव के, व कल के उपवास के
व परसों की मृत्यु के दैन्य के, महा अपमान के,
व लोभपूर्ण भयंकर चिंतो के उस पागल
यथार्थ का दीखता पहाड़ स्याहा। "10

इसी प्रकार शमशेर बहादुर सिंह भी अपने काव्य में सामाजिक यथार्थ को प्रदर्शित करते हैं। कहीं पर तो वे साम्प्रदायिक ताकतों का खुलकर विरोध करते हैं तो कहीं शांति, भाईचारे व सहयोग की कामना करते हैं। उनकी 'भारती की आरती' रचना भारतीय स्वाधीनता का स्वागत है। मध्यवर्ग की दीनता व साम्यवाद का चित्रण भी उन्होंने अपने काव्य में किया है। कला के माध्यम से वे एक स्थान पर मजदूरों की व्यथा का उल्लेख करते है -

"ये शाम है, कि आसमान खेत है पके हुए अनाज का लपक उठी' लहू भरी दरातियों की आग है धुआँ-धुआँ सुलग रहा .... के मजूदर का हृदय। "11

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 8, August 2023 |

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रगतिवादी कवियों में हमें सामाजिक यर्थाथवाद के दर्शन होते हैं। पंत , निराला के काव्य में बिम्बात्मक और वैचारिक यर्थाथवाद देखने को मिलता है तो केदार , नागार्जुन , त्रिलोचन , आदि कवियों ने शोषण , शोषित , दलित , सर्वहारा आदि को काव्य का मुख्य विषय बनाया। मुक्तिबोध , दिनकर तथा शमशेर बहादुर आदि कवियों के काव्य में भी प्रगतिवादी स्वर दिखाई दिए। कहीं नारी के प्रति दयनीय दृष्टिकोण तो कहीं पूंजीवाद का विरोध कहीं राष्ट्रीयता की भावना तो कहीं क्रांति का आह्वन , ये सभी प्रगातिवादी काव्य में यथार्थ को प्रस्तुत करने में सफल सिद्ध हुआ है।[11]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. पंत , खोज , पृ 0 89
2. डॉ . रघुवंश , आधुनिक कवि निराला , पृ 0-33
3. प्रकाशचंद गुप्त , कवि निरालाः एक अध्ययन , पृ 0-209-10
4. दिनकर , हूंकार , दिल्ली , पृ 0-22
5. केदारनाथ अग्रवाल , हे मेरी तुम , पृ 0 17
6. वही पृ 0-32
7. नागार्जुन , प्रेत का ब्यान , पृ 0 42
8. त्रिलोचन शास्त्री , दिंगत , पृ 0 52
9. शिवमंगल सिंह सुमन , पथ भूल ना जाना पथिक , हड्डियों का ताप , पृ 0 207
10. मुक्तिबोध , चांद का मुंह टेढ़ा है , पृ 0 16
11. रमाकान्त शर्मा , छायोवादोत्तर हिन्दी कविता , पृ 0 376

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 7.580

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com